Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"kZ 18 vad 01 30 tuojh] 2018 ewY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

कृषक मसीहा दीन बंधु सर छोटूराम

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

दीनबंधु किसान हितैषी स्वंय भुगतभोगी ने अपना जन्म दिवस नवंबर की बजाए बसंत पंचमी को मनाने का अधिमान दिया। इसी दूरदृष्टि, सख्त मेहनत और पक्के इरादे वाले किसान मसीहा ने अनेकों कदम उठाए ताकि समाज में संतुलन बना रहे। दीनबंधु का कहना था कि कानूनी तथा मीठे बन लड़ाई लड़ें और दुश्मन को कमजोर करने हेतू स्वंय को मजबूत करें। उनके दो उदाहरण सर्वविदित है ''जिस खेत से ना हो म्यसर दो जून की रोटी, उस खेत के गोशाए गंदम को जला दो।'' यह एक चेतावनी थी कि शासक समझ जाए - किसान को भूखा रहकर मेहनत की आदत है लेकिन अगर खाद्यान्न ही जल गया तो जनता क्या खाएगी? उन दिनों अकाल भी भीषण पड़ते थे। बंगाल का अकाल इतिहास के पन्नों में दिल दहला देने वाली परिकल्पना है।

दूसरे में वे किसान की मजबूती की बात करते हैं कि ''भर्ती हो जा रे रंगरूट, आड़ै मिलै तन्ने टूटे जूते, उड़ै मिलेंगें बूट'' इन दोनों में सहयोग के साथ-साथ किसान को जगाने का प्रयास हो रहा है और उनकी जादूमयी वाणी का असर भी विस्मरणीय है। प्रथम विश्व युद्ध में 22144 सैनिक भर्ती हुए थे और आज भी यह परंपरा जारी है। **यहां एक वर्णनीय तथ्य है कि विश्व में आज तक हुए हर युद्ध में हरियाणा का एक सैनिक जरूर था ।** भारतीय फौज पहले अंग्रेज हित लड़ती थी अब अपने स्वाभिमान के लिए। दीन बंधु ने अपने छात्रकाल में ही संघर्ष का रूख अपना लिया था। क्रिश्चियन मिशन स्कूल छात्रावास के प्रभारी के विरूद्ध चलाए गए आंदोलन में उनकी दक्षता एवं नेतृत्व की झलक स्पष्ट हो गई थी तथा भविष्य की रूप रेखा तैयार हो चुकी थी। इस आंदोलन में ही वे 'जनरल रोबर्ट' के नाम से विख्यात हुए और साथ वे अपने आदर्शों और युवा चरित्रवान छात्र के रूप में वैदिक धर्म और आर्य समाज में अपनी गहरी आस्था स्थापित कर गए। इसी की परिणिती में उन्होने 1913 में रोहतक में जाट स्कूल की स्थापना कराई।

अपने आदर्श एवं मानवता की मिसाल वे सदा बने रहे। वकालत जैसे पेशे में उन्होने झूठे मुकद्में ना लेने, छल-कपट से दूर रहना, मुव्वकिलों से सदव्यवहार जैसे आदर्श स्थापित किए। गरीब को वे निशुल्क कानूनी सलाह भी देते थे। बहुआयामि प्रतिभा के स्वामी ने 1915 में 'जाट गजट' नाम अखबार निकाला, उनका आदर्श मुंशी प्रेमचंद का वाक्य था ''खीचों ना मयानों को ना तलवार निकालो, जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो' और उन्होने ये साबित भी कर दिया। उन्हे सर की उपाधी भी मिली और शासकों में उनके खौफ की छाया भी प्रत्यक्ष है। एक बार कमीश्नर ने उन्हे देश विरोधी करार देकर देश निकाले के आदेश भी पारित कर दिए लेकिन जनता के आक्रोश के आगे झुकना भी पड़ा तथा अपने आदेश वापिस भी लेने पड़े।

साहूकारों का विरोध किया और आंदोलन भी हुआ, उनके पुतले भी जलाए गए तथा 'एह की हो गया-छोटू मोया' के नारे भी लगे लेकिन वे अडिग रहे और अंततः जीत का परचम भी लहराया।

वकालत जैसे व्यवसाय में भी चौधरी साहब ने नए ऐतिहासिक आयाम जोड़े। उन्होने झूठे मुकदमें न लेना, छल-कपट से दूर रहना, गरीबों का निशुल्क कानूनी सलाह देना, मुवक्किलों के साथ सदव्यवहार करना आदि को अपने वकालती जीवन का आदर्श बनाया। इन्ही सिद्धांतों का पालन करके केवल पेशे में ही नहीं, बल्कि जीवन के हर पहलू में चौधरी साहब बहुत उंचे उठ गए थे। इन्ही दिनों 1915 में चौधरी छोटूराम ने 'जाट गजट' नाम का क्रांतिकारी अखबार शुरू किया, जो हरियाणा का सबसे पुराना अखबार है और आज भी छपता है। इस अखबार के माध्यम से चौधरी छोटूराम ने ग्रामीण जन-जीवन का उत्थान और साहूकारों द्वारा गरीबों के शोषण पर एक सारगर्भित दर्शन दिया था, जिस पर शोध की जा सकती है। चौधरी साहब ने किसानों को सही जीवन जीने का मूलमंत्र दिया। जाटों का सोनीपत की जुडिशियल बैंच में कोई प्रतिनिधि न होना, बहियों का विरोध, जिनके जरिए गरीब किसानों की जमीनों को गिरवी रखा जाता था, राज के साथ जुड़ी हुई साहूकार कौमों का विरोध जो किसानों की दुर्दशा के जिम्मेवार थे, के संदर्भ में किसान के शोषण के विरूद्ध उन्होने डटकर प्रचार किया। उनके स्वंय के शब्दों में -''किसान कुंभकरण की नींद सो रहा है, मैं जगाने की कोशिश कर रहा हूं - कभी तलवे में गुदगदी करता हूं, कभी मूंह पर ठंडे पानी के छींटे मारूता हूं। यह आंखे खोलता है, करवट लेता है, अंगड़ाई लेता है और फिर जम्हाई लेकर सो जाता है। बात यह है कि किसान से फायदा उठाने वाली जमात एक ऐसी गैस अपने पास रखती है जिससे तुरंत बेहोशी पैदा हो जाती है और किसान फिर सो जाता है।''

चौधरी साहब का मानना था कि किसान को लोग अन्नदाता तो कहते हैं लेकिन यह कोई नहीं देखता कि वह अन्न खाता भी है या नहीं। जो कमाता है वह भूखा रहे यह दुनिया का सबसे बड़ा आश्चर्य है। मैं राजा-नवाबों और हिंदुस्तान की सभी प्राकर की सरकारों को कहता हूं कि वो किसान को इस कद्र तंग ना करें कि वह उठ खड़ा हो। इस भोलानाथ को इतना तंग न करो कि वह तांडव नृत्य कर बैठे। दूसरे लोग जब सरकार से नाराज हाते हैं तो कानून तोड़ते हैं, किसान जब नाराज होगा तो कानून ही नहीं तोड़ेगा, सरकार की पीठ भी तोड़ेगा।

'ks"k i`t&2 ij

शेष पेज–1

चौधरी छोटूराम ने राष्ट्र के स्वाधीनता संग्राम में डटकर भाग लिया और 1916 में पहली बार रोहतक में कांग्रेस कमेटी का गठन किया गया तथा चौधरी छोटूराम का आह्वान अंग्रेजी हुकूमत को कंपकपा देता था। चौधरी छोटूराम के लेखों और कार्य को अंग्रेजों ने बहुत भयानक करार दिया। फलस्वरूप रोहतक के डिप्टी कमीश्नर ने तत्कालीन अंग्रेजी सरकार से चौधरी छोटूराम को देश निकाले की सिफारिश कर दी। पंजाब सरकार ने अंग्रेज हुकमरानो को बताया कि चौधरी छोटूराम अपने आप में एक क्रांति है, उनका देश निकाला गदर मचा देगा, खून की नदियां बह जाएंगी। किसानों का एक-एक बच्चा चौधरी छोटूराम हो जाएगा। अंग्रेजों के हाथ कांप गए और कमीश्नर की सिफारिश को रद्द कर दिया गया।

चौधरी छोटूराम, लाला श्याम लाल और उनके तीन वकील साथियों, नवल सिंह, लाला लालचंद जैन और खान मुश्ताक हुसैन ने रोहतक में एक ऐतिहासिक जलसे में मार्शल के दिनों में साम्राज्यशाही द्वारा किए गए अत्याचारों की घोर निंदा की। सारे इलाके में एक भूचाल सा आ गया। अंग्रेजी हुक्मरानों की नींद उड़ गई। चौधरी छोटूराम व इनके साथियों को नौकराशाही ने अपने रोष का निशाना बना दिया और कारण बताओ नोटिस जारी किए गए कि क्यों न इनके वकालत के लाईसेंस रद्द कर दिए जायें। मुकदमा बहुत दिनों तक सैशन की अदालत में चलता रहा और आखिर चौधरी छोटूराम की जीत हुई। यह जीत नागरिक अधिकारों की जीत थी।

अगस्त, 1920 में चौधरी छोटूराम ने कांग्रेस छोड़ दी क्योंकि चौधरी साहब गांधी जी के असहयोग आंदोलन से सहमत नहीं थे। उनका विचार था कि इस आंदोलन से किसानों का हित नहीं होगा। उनका मत था कि आजादी की लड़ाई संवैधानिक तरीके से लड़ी जाए। कुछ बातों पर वैचारिक मतभेद होते हुए भी चौधरी साहब महात्मा गांधी की महानता के प्रशंसक रहे और कांग्रेस को अच्छी जमात कहते थे। चौधरी छोटूराम ने अपना कार्य क्षेत्र उत्तर प्रदेश, राजस्थान और पंजाब तक फैला लिया और जाटों का सशक्त संगठन तैयार किया। आर्यसमाज और जाटों को एक मंच पर लाने के लिए उन्होने स्वामी श्रद्धानंद और भटिंडा गुरूकुल के मैनेजर चौधरी पीरूराम से संपर्क साध लिया और उसके कानूनी सलाहकार बन बए।

सन 1925 में राजस्थान में पुष्कर के पवित्र स्थान पर चौधरी छोटूराम ने एक ऐतिहासिक जलसे का आयोजन किया। सन 1934 में राजस्थान के सीकर शहर में किराया कानून के विरोध में एक अभूतपूर्व रैली का आयेजन किया गया, जिसमें 10,000 जाट किसान शामिल हुए। यहां पर जनेऊ और देसी घी दान किया गया, महर्षि दयानंद के सत्यार्थ प्रकाश के श्लोकों का उच्चारण किया गया। इस रैली से चौधरी छोटूराम भारतवर्ष की राजनीति के सतंभ बन गए।

पंजाब में रौलट एक्ट के विरूद्ध आंदोलन को दबाने के लिए मार्शल ला लागू कर दिया गया था जिसके परिणामस्वरूप देश की राजनीति में एक अजीबोगरीब मोड़ आ गया। एक तरफ गांधी जी का असहयोग आंदोलन था तो दूसरी ओर प्रांतीय स्तर पर चौधरी छोटूराम और चौधरी लालचंद आदि जाट नेताओं ने अंग्रेजी हुकूमत के साथ सहयोग की नीति बना ली थी। पंजाब में मांटेग्यू चौक्सफोर्ड सुधार लागू हो गए थे, सर फजले हुसैन ने खेतिहर किसानों की एक पार्टी 'जमींदारा पार्टी' खड़ी कर दी। चौधरी छोटूराम व इसके साथियों ने सर फजले हुसैन के साथ गठबंधन कर लिया और सर सिकंदर हयात खान के साथ मिलकर युनियनिस्ट पार्टी का गठन किया। तब से हरियाणा में दो परस्पर विरोधी आंदोलन चलते रहे। चौधरी छोटूराम का टकराव एक ओर कांग्रेस से था तथा दूसरी ओर शहरी हिंदू नेताओं व साहूकारों से होता था।

चौधरी छोटूराम की जमींदारा पार्टी किसान, मजदूर, मुसलमान, सिक्ख और शोषित लोगों की पार्टी थी लेकिन यह पार्टी अंगेजों से टक्कर लेने को तैयार नहीं थी। हिंदू सभा व दूसरे शहरी हिदुओं की पार्टियों में चौधरी छोटूराम का मतभेद था। भारत सरकार अधिनियम 1919 के तहत 1920 में आम चुनाव कराए गए। इसका कांग्रेस ने वहिष्कार किया और चौधरी छोटूराम व लालसिंह जमींदारा पार्टी से विजयी हुए। उधर 1930 में कांग्रेस में एक और जाट नेता चौधरी देवीलाल को चौधरी छोटूराम की पार्टी के विरोध में स्थापित किया। भारत सरकार अधिनियम 1935 के तहत सीमित लोकतंत्र के चुनाव 1937 में हुए। इसमें 175 सीटों में से यूनियनिस्ट पार्टी को 99, कांग्रेस को केवल 18, खालसा नेशनलिस्ट को 13 और हिंदु महासभा को केवल 12 सीटें मिली थी। हरियाणा देहाती सीट से केवल एक प्रत्याशी चौधरी दुलीचंद ही कांग्रेस से जीत पाए थे।

चौधरी छोटूराम के कद का अंदाजा इस चुनाव से अंग्रेजों, कांग्रेसियों और सत्ता विरोधियों को हो गया था। चौधरी छोटूराम की लेखनी जब लिखती थी तो आग उगलती थी। 'ठग बाजार की सैर' और 'बेचारा किसान' के लेखों में से 17 लेख जाट गजट में छपे। 1937 में सिकंदर हयात खान पंजाब के पहले प्रधानमंत्री बने और झज्जर के ये जुझारू नेता चौधरी छोटूराम विकास व राजस्व मंत्री बने और गरीब किसान के मसीहा बन गए। चौधरी छोटूराम ने अनेक समाज सुधारक कानूनों के जरिए किसानों को शोषण से निजात दिलवाई, जिनमें मुख्यतः साहूकार पंजीकरण एक्ट -1938 जो 2 सिंतबर 1938 को प्रभावी हुआ था। इसके अनुसार कोई भी साहूकार बिना पंजीकरण के किसी को कर्ज नहीं दे पाएगा और न ही किसानों पर अदालत में मुकदमा कर पाएगा। इस अधिनियम

के कारण साहूकारों की एक फौज पर अंकुश लग गया। गिरवी जमीनों की मुफ्त वापसी एक्ट 1938 जो 9 सिंतबर 1938 को प्रभावी हुआ। इस अधिनियम के जरिए जो जमीनें 8 जून 1901 के बाद कुर्की से बेची हुई थी तथा 37 सालों से गिरवी चली आ रही थी वो सारी जमीने किसानों को वापिस दिलवाई गई। इस कानून के तहत केवल एक सादे कागज पर जिलाधीश को प्रार्थना-पत्र देना होता था। इस कानून में अगर मूल राशि को दोगुणा धन साहूकार प्राप्त कर चुका है तो किसान को उसकी जमीन का पूर्ण स्वामीत्व दिए जाने का प्रावधान किया गया। कृषि उत्पाद मंडी अधिनियम 1938 जो 5 मई 1939 को प्रभावी माना गया। इसके तहत नोटिफाइड ऐरिया में मार्किट कमेटियों का गठन किया गया। एक कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार किसानों को अपनी फसल का मूल्य एक रूपये में से 60 पैसे ही मिल पाता था। अनेक कटौतियों का सामना किसानों को करना पड़ता था। आढ़त, तुलाई, रोलाई, मुनीमी, पगेदारी और कितनी ही कटौतियां होती थी लेकिन इस अधिनियम ने किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य दिलवाने का नियम बना। आढ़तियों के शोषण से किसानों को निजात इसी अधिनियम ने दिलवाई। व्यवसाय श्रमिक अधिनियम 1940 जो 11 जून 1940 को लागू हुआ जिससे बंधुआ मजदूरी पर रोक लगाए जाने वाले इस कानून ने मजदूरों को शोषण से निजाट दिलवाई। इसके अनुसार सप्ताह में 61 घंटे, एक दिन में 11 घंटे से ज्यादा काम नहीं लिया जा सकेगा। वर्ष भर में 14 छुट्टियां दी जाएंगी तथा 14 साल से कम उम्र के बच्चों से मजदूरी नहीं करवाई जाएगी। दुकान व व्यवसायिक संस्थान रविवार को बंद रहेगें। छोटी-छोटी गलतियों पर वेतन नहीं काटा जाएगा। जुर्माने की राशि श्रमिक कल्याण के लिए ही प्रयोग हो पाएगी। इन सबकी जांच एक श्रम निरीक्षक द्वारा समय-समय पर की जाया करेगी। इनके इलावा कर्जा माफी अधिनियम 1934 एक क्रांतिकारी ऐतिहासिक अधिनियम दीनबंधु चौधरी छोटूराम ने 8 अप्रैल 1935 में किसान व मजदूर को सूदखोरों के चंगुल से मुक्त कराने के लिए बनवाया। इस कानून के तहत अगर कर्जे का दोगुना पैसा दिया जा चुका है तो ऋण मुक्त समझा जाएगा। इस अधिनियम के तहत कर्जा माफी (रीकैंसीलेशन) बोर्ड बनाए गए जिनमें एक चेयरमैन और सदस्य होते थे। दाम दुपट्टा का नियम लागू किया गया, जिसके अनुसार दुधारू पशु, बछड़ा, ऊंट, रेहड़ा, घर, गितवाड़ और आजीविका के साधनों की नीमाली नहीं की जाएगी। इस कानून के तहत अपीलकर्ता के संदर्भ में एक दंतव्य बहुत प्रचलित हुई थी कि लाहौर हाईकोर्ट में मुख्य न्यायधीश से एक अपीलकर्ता नेकहा कि मैं बहुत गरीब आदमी हूं, मेरा घर और बैल कुर्की से माफ किया जाए। न्यायधीश सर शादीलाल ने व्यंगात्मक लहजे में कहा कि छोटूराम नाम का आदमी है, वही ऐसे कानून बनाता है, उनके पास जाओ और कानून बनवा कर लाओ। अपीलकर्ता चौधरी छोटूराम के पास आया और यह टिप्पणी उन्हे सुनाई। चौधरी छोटूराम ने कानून में ऐसा संशोधन करवाया कि उस अदालत की सुनवाई पर प्रतिबंध लगा दिया और इस तरह चौधरी छोटूराम ने व्यंग का जबरदस्त उत्तर दिया। **पाकिस्तान के एक मात्र नोबल पुरस्कार विजेता अब्दुस कलेम, दीनबन्धु के वजीफे से पढ़े थै। पुरस्कार समारोह में उन्होंने दीनबन्धु का आभार व्यक्र करते हुये कहा था।**

'अगर छोटू राम ने होते आज अब्दुस कलाम छंद ना होते'

दीनबन्धु हर जाति-पाति, रंगभेद से उपर थे। वे केवल मानवतावादी थे और वे जीवन प्रयन्त कामगार, काश्तकार के हक के लिये सघर्षरम रहे।

1942 में सर सिकंदर हयात खान का देहांत हो गया और खिज्र हयान खान टीवाना ने पंजाब की राजसत्ता संभाली। उधर मुहम्मद अली जिन्हा ने 1944 में लाहौर में सर खिज हयान खान पर दबाव डाला कि चौधरी छोटूराम का दबदबा कम किया जाये और पंजाब की युनियनिस्ट सरकार का लेबल हटाकर मुस्लिम लीग सरकार का नाम दिया जाए क्योंकि सर छोटूराम अब्दुल कलाम की नीतियों के समर्थक थे। मुहम्मद अली जिन्हा और चौधरी छोटूराम सीधे टकराव की स्थिति में आ गए। अब तो चौधरी छोटूराम की पार्टी के सामने मुस्लिम लीग और कांग्रेस दोनों ही चुनौती बन गई थी लेकिन दूसरे महायुद्ध में चौधरी छोटूराम द्वारा कांग्रेस के विरोध के बावजूद सैनिकों की भर्ती से अग्रेज बड़े खुश थे। अंग्रेजों ने हरियाणा के इलाके की वफादारी से खुश होकर हरियाणा निवासियों को वचन दिया कि भाखड़ा पर बांध बनाकर पानी हरियाणा को दिया जाएगा। सर छोटूराम ने ही भाखड़ा बांध का प्रस्ताव रखा था कि सतलुज के पानी का अधिकार बिलासपुर के राजा का है और रोहतक के महान सपूत ने बिलासपुर के राजा के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए। **वर्तमान में किसान, कामगार, काश्तकार सरकार एवं सरकारी तंत्र की ओर से बढ़ती हुई उपेक्षा के कारण यह वर्ग आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहा है व इस प्रकार की घटनायें दिन प्रतिदिन बढ़ रही है लेकिन किसान वर्ग की कोई सुध लेने वाला नहीं है। अतः दीनबन्धु सर छोटूराम की सार्वजनिक वाणी आज उपेक्षित किसान-कामगार की बात याद आ रही है और वह हर कदम यह आहवान करने को मजबूर है:-**

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले खुदा बन्दे से पूछे, बता तेरी रजा क्या है।

सन 1924 से 1945 तक पंजाब की राजनीति के सूर्य चौधरी छोटूराम का 9 जनवरी 1945 को देहावसान हो गया और एक क्रांतिकारी युग का यह सूर्य अस्त हो गया लेकिन कृषक वर्ग उन्हे आज भी नमन करता है।

डा0 महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस., सेवानिवृत,
प्रधान जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

जाटनीति की समीक्षा

– सूरजभान दहिया

बी.एस. दहिया की पुस्तक 'दि जाट्स–एन्सिएंट रूलरज' में उल्लेख आता है कि सातवीं सदी से पूर्व जाटों का शासन था। जाट शासन के अन्तर्गत राजा का पद पैतृक नहीं होता था बल्कि राजा का चुनाव राजसभा द्वारा बुद्विमता, नैतिकता एवं समपर्णता के आधार पर होता था। यदि गलती से अयोग्य व्यक्ति राजा चुन लिया जाता था तो उसे हटा भी दिया जाता था। परंतु इसके पश्चात् राजसभा में भी कहीं–कहीं चाटुकारिता हावी होने लगी और राजा इसका शिकार होने लगा। फिर एक संघर्ष ने जन्म ले लिया जिससे राजा का पद पैतृक बन गया। यहीं से राजपूत व्यवस्था की उत्पति आरम्भ हुई। इससे धीरे–धीरे चाटुकार दरबारियों ने 'जाट शासक'का उल्लेख करना ही छोड़ दिया। नैतिक जाट समुदाय अपनी गणराज्य परम्परा पर अडिग रहा, परंतु पैतृक राज व्यवस्था के सामने जाट गणराज्य व्यवस्था मानो लुप्त सी होने लगी। शक्तिशाली जाट शासक फिर भी अपने राज्यों को स्थापित करने में कामयाब रहे जिससे निर्बल पैतृक राज व्यवस्था वाले राजा पारम्परिक गणतंत्र जाट शासकों से ईर्ष्या करने लगे। चाण्क्यनीति इसी का प्रतिफल हो सकती है जो काफी समय पूर्व जाट गणराज्य राज्यों में सेधं करने लग गई थी।

अब तरावडी की 1192 की दूसरी लड़ाई का अवलोकन कीजिये जिसे 'जयचंद नीति'का प्रतिफल माना जाता है। पृथ्वीराज चौहान की हार और मोहम्मदगौरी की विजय ने जाट प्रभुत्व पर तीखा प्रहार किया। इसे बाद के आक्रांताओं ने जाट शक्ति को इतना क्षीण कर दिया कि जाट शासक बनने के अपने पारम्परिक अधिकार से वंचित हो गये। फिर भी वे अपन गणतंत्र व्यवस्था के माध्यम से मुस्लिम बादशाहों का निरन्तर लोहा लेते रहे। भरतपुर घराने ने समय की परिस्थितियों के अनुसार जाटलैंड़ को परिभाषित करके पैतृक राजघराने को शक्तिशाली बनाया परंतु भरतपुर हाऊस सदैव जनता के प्रति उतरदायी रहा। इससे जाटों में खोई हुई अपनी सता को पुनः पाने के लिए नया उत्साह प्रवाहित हुआ और उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य से 1857 में अपनी आजादी को पाने के लिए स्वतंत्रता संग्राम लडा। उन्होंने अपने जाटलैंड़ में जनता सरकारें भी गठित कर ली थीं। यह संग्राम अपने उद्देशय की प्राप्ति इसलिए न कर सका क्योंकि जाटों की जनता सरकारों को गिराने के लिए पंजाब की कुछ जाट रियासतों के शासक अंग्रेजों से जामिले और अपने ही भाईयों की जनता सरकारों को केवल गिराया ही नहीं बल्कि हजारों–लाखों जाटों को मौत के घाट उतरवा दिया। 1192 से लेकर 1857 तक जचन्द नीति के कारण जाट सता से वंचित रहे, इसके पश्चात् अंग्रेजों की 'फूट करो – राज करो– की नीति बहुत ही प्रभावी सिद्व हुई। इस नीति का अंग्रेजों ने 1757 से 1857 के बीच कई बार प्रयोग किया था, परंतु इस नीति की सफलता इतनी नहीं हुई जितनी 1857 के पश्चात् हुई। इसके बाद अंग्रेजों को जाटों की शक्ति का अहसास हुआ और उनकी शक्ति को दिल्ली के आस–पास बढ़ने नहीं दिया गया। हां, जाट की बहादुरी का भरपुर उपयोग उन्होंने विश्वयुद्धों को जितने में जरूर किया।

चौ. छोटूराम ने अंग्रेज नीति को समझा, परखा तथा जाटों की सुनियोजित तरीके से संगठित करना शुरू कर दिया। उन्हें भारत की स्वतंत्रता दिखाई दे रही थी इसलिए उन्होंने भावी लोकतंत्र में जाटों की प्रभावी भूमिका को परिभाषित कर दिया था। यह जाटों के लिए दुर्भाग्य रहा कि वे आजादी से पूर्व ही 1945 में स्वर्गवास हो गये। इसके पश्चात् जाट शक्ति तितर–बितर हो गई।

1977 में जनता सरकार के गठन से जाट शक्ति को एक नया आयाम मिला, चौ. चरण सिंह प्रधानमंत्री भी बने, परंतु वे भी एक साजिश का शिकार हो गये। यह कैसी विडम्बना थी कि चौ. अजित सिंह को दरकरार करके मुलायम सिंह को उतर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया गया। चौ. देवीलाल को किस तरह सता से वंचित करके भजनलाल को हरियाणा का मुख्यमंत्री बनाया, चौ. साहिब सिंह वर्मा को किस तरीके से दिल्ली के मुख्यमंत्री से हटाकर श्रीमती सुषमा स्वराज को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनाया। इससे पूर्व भी किस प्रकार राजस्थान में कुम्भाराम आर्य एवं नाथूराम मिर्धा को सता के गलियारे में उपेक्षित किया गया और हाल में किस प्रकार जाटों की प्रबल दावेदारी को दरकिनार करके गहलोत को राजस्थान के मुख्यमंत्री की कुर्सी थमा दी। क्यों चौ. देवीलाल को प्रधानमंत्री बनते–बनते रोका गया? जाटों की उपेक्षा किस नीति के तहत हुई इस बात पर राजनीति के शास्त्री अध्ययन कर सकते हैं। वे इस नीति को परिभाषित भी कर सकते हैं।

मैं उपरोक्त विवरण देकर इस नीति को परिभाषित करने का दायित्व उन जाट बुद्धिजीवियों, इतिहारकारों व राजनीतिज्ञों पर छोड़ रहा हूं जिन्होंने स्कूल छात्र के रूप में हमारा प्रदूषित इतिहास पढ़ा है तथा जाटों के सही इतिहास को पढ़ने से वंचित रखा है। अच्छा होता कि वे ऐसे इतिहास को पढ़ते ही नहीं। इससे कम से कम आज वे स्वतंत्र रूप से जाट इतिहास को समझने के काबिल तो होते। वे तो अब प्रदूषित इतिहास के मानसिक रूप से शिकार हैं जो वे इस बात को मानने को तैयार ही नहीं कि हम शासक थे और शासक बन सकते हैं। मेरे सामने तो एक अनुभव है कि खंडित राजनीति से आम जाट का भला होना बंद हो गया है। गांव–गांव में जो एक अपनापन था वह जाट बिरादरी से गायब होता जा रहा है। श्री मुलायम सिंह यादव शेर हैं। श्री लालु प्रसाद यादव भी शेर, सुश्री मायावती भी शेर की तरह दहाड़ती हैं– राजनीति के मंच पर प्रभावी हैं और हम कहां हैं? यह आप बतायें।चौ. छोटूराम ने मुस्लिम वोटों को संजोय रखा था, चौ. चरण सिंह ने भी ऐसा ही किया। आगे हमने दूसरी जातियों के वोटों को गंवा दिया, अपनी कौम को बांट दिया। कहते हैं जटडा और काटड़ा अपने को मारता है– राष्ट्रीय राजनीति में हम आज कहां हैं? परिणाम हमारे सामने हैं। हमारे नेता अपनी स्वार्थ नीति से खुद तो तर गये, पर कौम को ले डूबे– यह जाटनीति नहीं थी।

विदेशी विद्वानों ने यह भ्रम फैलाया था कि आर्य इस देश के निवासी नहीं थे, लेकिन वैज्ञानिक खोजों ने इस भ्रम का निवारण करके अब आर्यो का मूल स्थान जाटलैंड को ही माना हैं। यहीं से आर्य लोग एशिया और युरोप में गए। आर्य लोग लैंड में सर्वप्रथम सरस्वती के तट पर ही निवास करते थे। सरस्वती आर्यो कि जीवन दायिनी मां थी। इस क्षेत्र को हरा–भरा रखती थी और खाद्यान्न देकर धनसम्पति से उनके

भण्ड़ार भरती थी। इसलिए आर्यो ने उससे प्रार्थना की थी– "सत्यपथ प्रदर्शिका, न्याय–औचित्य उत्प्रेरिका, सर्वमंगल दायिनी सरस्वती मां हमारी भेंट पूर्ववत स्वीकार करती रही।" जाटों ने कृषि और पशु पालन व्यवसाय को अपनाकर आर्य सभ्यता को जीवित रखा है क्योंकि आर्यसभ्यता मूलतः कृषि प्रधान थी। जाट की इस धरोहर को विस्मृत नहीं किया जा सकता। जाटों ने आर्य संस्कृति, कृषि, पशुपालन के साथ–साथ स्वदेश–रक्षार्थ सैनिक दिये हैं– जाट आयुद्धजीवी थे और रहेंगे भी– जय जवान, जय किसान ही इनकी विरासत रही है। लालकिले, ताजमहल या ऐसे पुरातत्व ऐतिहासिक स्थलों के रखरखाव से हमारी हैरीटेज सुरक्षित नहीं रह सकती जबकि जीवित हैरीटेज–किसान को आत्महतांए करने के लिए बाधित किया जा रहा है। पहले लोग राजनेताओं को आदर से देखते थे। अब अधि ाकांश राजनीतिबाज उपेक्षित हैं और कुछ तो घृणा के पात्र भी बन चुके हैं। कारण है कि राजनीति पहले जनहित का कार्य समझा जाता था राजनीति स्वार्थसिद्ध का साधन बन गया है। जाटों को खतरा अन्य कौमों से ही नहीं बल्कि कौम के अन्दर से भी है। कुछ ऐसे लोग इस कौम में हैं जो आम जाट भाई के अधिकारों को हड़पकर अपना अधिनायकवाद स्थापित करने में सफल हो गए हैं। जाटनीति में तो जन, गण व मन अधिनायक हैं। जाट भाइयों समझना चाहिए कि स्वराज उनकी सबसे मूल्यवान धरोहर है। जिस प्रकार किसी मूल्यवान वस्तु की डकैती, चोरी या ठगी हो सकती है, उसी प्रकार जाट राज्य – जाट आत्मसम्मान की ठगी सी हो गई है। इसलिये मैं कह रहा हूं बार–बार लिख रहा हूं– "सतत् जागरूकता ही जाट राज्य का मूल है, जो कौम जागरूक नहीं होती उसका आत्मसम्मान ठग लिया जाता है। हमारे साथ भी ऐसा ही हुआ है। अपने वर्चस्व को पुनः स्थापित करने के लिए बढ़ती विघटनकारी राजनीति से दूर रहना होगा। हमारे कौम के रहनुमाओं का स्तर गिर गया है। अधिकांश राजनीतिबाज कौम की चिंता छोड़कर अपना–अपना वोट बनाने में लगे हैं। हमें इस बंदरबाट से अलग रहना होगा, इसलिए कौम की प्रतिष्ठा हेतु राजनीति को सुधारना हम सब लोगों का दायित्व है। हम लोकतंत्र हैं, इसलिए हमारा संपूर्ण हित इसके माध्यम से ही सुरक्षित रहेगा।"

जाट समुदाय के संत व महापुरूष

वीराज जयदेव – भम्भयोलिया गोत्री जाट जिसने धोलपुर (राजस्थान)और गोहद मध्यप्रदेश रियासतों की स्थापना की।

वीरशीरोमणि भज्जसिंहन – सिनसिनवार गोत्री जाट, जिसने शहजादा बेदाबख्त तथा बिशनसिंह राजपुत की सेनाओं को सिनसिनी युद्व में नाको चने चबाये।

वीर कैलाश – बाजवा गोत्री जाट जिसने कैलाश गाजवा (पंजाब) रियासत की स्थापना की।

वीर सूरजप्रकाश जाट – दहिया गोत्री जाट, सर्वखान हरयाणा का वीर एक सेनानति जिसने तुर्को को करनाल के मैदान में हराया।

दसोदसिंह – गिल गोत्री जाट जिसने निशानवाला मिसल की स्थापना की।

चतरसिंह – शिवी गोत्री जाट जो महाराजा रणजीतसिंह के दादा थे जिन्होनें सुकरचकिया मिसल की स्थापनाकी।

करोडसिंह – विर्क गोत्री जाट जिन्होनें 'करोडों सघियां' मिसल की स्थापना की।

जाटनी सदाकौर – कन्हैया मिसल की सरदार (मुखिया) महाराजा रणाजीतसिंह की सास।

अकाली फूलसिंह – सहारण गोत्री जाट महाराजा रणजीतसिंह के सेनापति तथा अकाल तख्ब के जत्थेदार।

वीर कान्हा रावत – मेवात के रहने वाले रावत गोत्री जाट जो औंरगजेब के विरूद्व लडकर शहीद हुए। इस वीर जाट को औंरगजेब ने निंदा जमीन में गडवा किदा था जिनका इतिहास बहुत लम्बा है।

क्रांतिकारी राजा महेन्द्रताप – ठेनुवा गोत्री मुरसान (उ०प्र०) के जाट राजा जिसने देश की आजादी के लिए अपनी रियासत की लि चझा दी और 32 साल विदेंशो में रहकर 'आजाद हिन्द सरकार' की स्थापना करके आजादी का बिगुल बजाते रहे। आई.एन.ए. के वास्तविक संस्थापक वही थे, नेता जी इसके सेनापति थे तो राजा जी बसके राष्ट्पति थे। लेकिन अफसोस है कि पक्ष्मी उतर प्रदेश के क्षेत्र को छोडकर जाट भी उनके बारे में नहीं जानते।

जनरल माहनसिंह – नेमा जी सुभाष की आई.एन.ए. में एक प्रमुख सेनापति थे।

वीर योद्धा पदमसिंह जाट – आई.एन.ए. में वीरता की सबसे बडी उपाधि वीर–ए–हिन्द थी, जिसमें एकमात्र हिन्दू को यहं उपाधि मिली बाकी दो मुसलमानधर्मी जाट थे। नेता जी को इन पर बडा गर्व था।

वीर अजीतसिंह संधू शहीद भगतसिंह के चाचा जी तथा महान क्रांतिकारी जिन्होनें नारा दिया 'पगडी सम्भाल ओ जटा पगडी सम्भाल'।

शहीद वीर बन्तासिंह – दायमा गोत्र के जाट, शहीद भगतसिंह के साथी तथा महान निडर कांतिकारी।

शेरे दिल अवतारसिंह शराबा – ग्रेवाल गोत्री शहीद भगत सिंह के आदर्श, जिनको फ़ुांसी की सजा सुनाने के 4 महीने बाद जब फांसी हुई तो 8 किलो वनज बढा हुआ मिला।

वीर बाबा बेशाखासिंह – महान् ऋांतिकारी बौर अंग्रेजी सरकार का बढा सिरदर्द।

शेरे दिल शहीद हरिकिशन – महान् ऋांतिकारी जिसको फांसी सुनाने पर जिन्होनें ज से कहा – ाद्र4)क्ष्क्स्ऱ्

ताना जाट – मलसूरा गोत्री जाट जिसने शिवाजी व उसके पुत्र सम्भाजी को औंरगजेब की जेल से मिठाई के टोकरों में बाहर निकाला।

मेजर जयपालसिंह मलिक – महान् क्रांतिकारी जो अंग्रेजी सेना के सीने में कील थे।

शहीद रंगसिंह व शहीद वीरसिंह – आजादी के दिवाने।

वीर योद्धा सज्जनसिंह जाट – सतारा रियासत के संस्थापक (महाराष्ट्र)।

हरफूल जाट जुलानीवाला – श्योराण गोत्री जाट, इनकी बहादुरी मंगल पाण्डे से कई गुणा अधिक थी। ये जींद हरयाणा के जुलानी गांव के रहने वाले थे।

हीर–रांझा – दक्षिण एशिया के महान् जाट युगल प्रेमी हुए जिसमें लडकी का नाम हीर तथा गोत्र स्याल था, लडका ढिलो गोत्र रांझा था।

मिर्जा और साईबा – महान् प्रेमीयुगल हुए, जिसमें मिर्जा खरल गोत्री जाट तथा साईबा भराईच गोत्री जट पुत्री थी।

पीलू जट – मिर्जा साहिबा पर लोकगीत लिखकर एक विशाल साहित्य की रचना की।

कादर यार – सन्धु गोत्री जाट जिसने पूरण भक्त पर लोकगीत तथा साहित्य की रचना की।

भाई मनीसिंह – 'दौलत' गोत्री योद्धा। एक लेखक और शहीद जिन्होनें मौलिक 'गुरूपंथ' को लिपिबद्ध किया।

भाई महताबसिंह – भंगू गोत्री पीर योद्धा जाट–जिसने स्वर्ण मन्दिर को अपवित्र करने वाले रांघडो 'मुस्लिम राजपुतों' से बदला लिया।

राजा राव नैनसिंह – ये कश्यप गोत्री जाट थे, राव इनकी उपाधि थी। इनका छोटा सा व आखिरी राज 12वीं सदी में ब्यावार (राज) के लहरीग्राम में था। जो आज रैबारी जाति का ग्राम है। ये चौ. संग्रामसिंह गोत्र का प्रचलन हुआए के पिता थे। पहले इन कश्यप गोत्री जाटों का बडा पंचायतों राज सारसू जगंल (राज.) पर था। राव व संघा इन जाटों की उपाधि रही है। 14वीं सी में चरखों दादरी हरयाणा क्षेत्र में आए।

धौलपुर नरेश उदयभनुसिंह – इन्होनें दिल्ली के बिरला मन्दिर की नींव अपने करकमलों से सन् 1932 में रखी थी। इसका पत्थर मन्दिर के बायीं तरफपार्क में लगा हुआ है।

वीर योद्धा रामसिंह – ये खोजा गोत्री जाट थे, जिन्होनें राजस्थान में 11वीं सदी में टोंकरा थे, शहर बंसाया जो आज ठोंक कहलाता है।

वीर नल्ह बिजारणिया – इतिहासकार लिखते हैं कि इनके पूर्वज सिकन्दर की सेना में भारत आये थे। ये स्वंय भी सिकन्दर के एक सेनापति थे। ये बिजारणिय इनकी पदवी थी, इन्हीं के वंशज योद्धा जगतसिंह, वीरसिंह व देवराज आदि हुए। यह पदवी इनके गोत्र, में बदल गई और आज गलत उच्चारण करकें इन्हें लोग बिजाणियां बोलते है।

याद रहे सिकन्दर की सेना में काफी जाट थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि हमेशा जाट ही जाट से लडते रहे। जब सिकन्दर की युनानी सेना ने ब्यास से आगे बढने से मना कर दिया तो सिकन्दर ने कहा था 'मैं जाटों के साथ आगे बढ जाऊगा'।

वीर खेमसिंह – भूखर गोत्री जाट, जिसका सांभर प्रदेश (राज.) पर राज था। इन्हीं के वंशज योद्धा उदयसिंह हुए।

जाट नरेश सम्मतराज – ये भादु गोत्री महान् योद्धा जाट राजा हंए, जिन्होनें राजस्थान में भादरा बसाया और राज किया।

शेर जाट रणमल – इस योद्धा जाट ने जहां रणखंभ गाडा था वही बाद में रणखंभ गाडा कहलाया। बाद में यह राज चौहान राजपुतों के हाथ चला गया।

नरेश नागावलोक – यह नागिल गोत्री जाट थे जिनका मेदपाट (राज.) था। बाद में इन जाटों ने नागौर व नोहर पर भी राज किया।

सरदार लाडसिंह – यह जाखड गोत्री जाट थे, जिन्होनें रियाणा में लाडान गांव बसाया। ये योद्धा जाखड गोत्र के कुछ जाटों को राजस्थान से हरयाणा क्षेत्र में लाये।

वीर बादल बौर गौरा – राणा रायमल के दो जाट सेनापति थे जिनके नाम पर चितौड में दो गुम्बजदार मकान है। ये चाचा भतीजे थे।

पीर शहीद माडू उर्फ उदयसिंह – ये वीर योद्धा शूरवीर गोकुला जाट के साथ शहीद हुए।

नेता श्रापित माखन – ठेनुवा गोत्री जाट, जिसने इटावा (ऊ.प्र.) रियासत की स्थापना की।

जाट योद्धा भागाल – मीठा गोत्री जाट, जिसने इटावा (ऊ.प्र.) के पास फफूंद राज्य की स्थापना की।

वीर योद्धा पाखरिया – महाराजा जवारसिंह भरतपुर देश के सेनापति।

खुटेल गोत्री जाट जिसने लाल किले के किवाड उतारकर पंहुचाये।

सेनापति पूर्ण जाट – गढवाल गोत्री जाट, जो मलखान के सेनापति थे। इनहीं के पूर्वजों ने उतर प्रदेश के गढमुकतेक्षर का निर्माण करवाया।

प्रचण्ड वीर खेमकरण – शूर गोत्री जाट, जिनके कारण शौरसैन क्षेत्र कहलाया।

धर्म

– डा. भूपसिंह, भिवानी

धर्म एक ऐसा शब्द है जिससे पृथ्वी पर रहने वाली सभी 7 अरब लोगों का संगंध है। जो आस्तिक हैं वे धर्म का पक्ष लेते हैं। अपने–अपने धर्म का प्रचार–प्रसार करने का प्रयास करते हैं। ओर जो नास्तिक हैं वे धर्म से बचने और दूसरों को धर्म से दूर रहने का प्रचार–प्रसार करते हैं। कहने का अभिप्राय धर्म से किसी का जीवन अछूता नहीं है। धर्म के पक्ष या विपक्ष में सभी की भागीदारी किसी न किसी रूप में अवश्य रहती है। निश्चित रू॰ में धर्म के मानने वालों के जीवन पर धर्म का अवश्य प्रभाव रहेगा। यह प्रभाव दोनों प्रकार का रहा है। धर्म को मानने वालों की ओर से दूसरों को सुख पहुँचाने का प्रयास हुआ है।

परन्तु पिछले 3000 साल से वर्तमान तक जितना उत्पान, खून खराबा, घृणा, बंटवारा वैर–विरोध, संघर्ष, नर–संहार धर्म के नाम

पर हुआ है। उतना जान–माल का नुकसान युद्वो, महामारियों व प्राकृतिक आपदाओं के कारण नहीं हुआ। सबसे आर्श्चजनक तो यह है कि जिस आर्श्चय चकित करने वाली उँचाई पर विज्ञान की प्रगति हुई है उससे कहीं ज्यादा कटट्रता व अंधविश्वास धर्म के क्षेत्र में हुआ है।

वैज्ञानिक प्रगति होते हुए भी, धर्म का हस्तपेक्ष मानव जीवन में क्यों बढ रहा है ? निश्चित रू‍प से इसका कारण जीवन में धर्म का महत्व है। जीवन में धर्म का महत्व क्या है कुद उद्धरणों से स्पष्ट होगा। आचार्य चाण्क्य कहते हैं – सुखस्य मूलम धर्म : ! शास्त्र कहता हैं धर्म एव हतो हन्दि। धर्मो हीन पशुः। महाभारत कहता है – धर्मो धायरेत प्रजाः। मनु महाराज कहते हैं– अधर्मेपाधते समूलमस्तु विनश्चति। टालस्टाय कहते हैं– बिना धर्म के जीवन, बिना हृदय के शरीर जैसा है।

लोक कहावत भी है–मनुष्य का सब कुछ छूट जाता है, केवल धर्म साथ जाता है। वास्तव में जिस वस्तु को मृत्यु भी अलग न करे सके अर्थात् जिसको मृत्यु भी न जीत सके महत्वपूर्ण तो है ही। जिन ऋषि मुनी–महापुरूषों ने धर्म को जीवन की प्रत्येक वस्तु से उपर स्थान दिया है, उनके अनुसार धर्म कजसे कहा गया है। यह जान लेना अनिवार्य होगा। धारियते यः सरू धर्म धारण करने योग्य को ध ारणा करना धर्म है। क्या धारण करे – मनु महाराज कहते हैं– घृति क्षमा दमोअस्तेए शौचमिन्द्रिय निग्रहः। धीर्विधा सत्यमक्रोधो दशक ध र्म लक्षणम।

मनु कहते हैं– यस्य तर्केण अनुसन्धे सः धर्मः

ऋषि कणाद कहते हैं– यतो अभ्युदय निश्रेय सिद्विः सः धर्मः। तोक–परलोक की सिद्वि करने वाला धर्म है।

मनु महाराज आगे कहते हैं – आत्मनः प्रतिकुलानी परेषां न समाचरेत। महार्षि दयानन्द सरस्वती कहते हैं– सत्याचरण ही ध र्म है। इस किसको धर्म कहें– धर्म पर क्यों चले, यह सब उहापोह और प्रयास किसलिए है। इन सबका एक ही उतर है– प्राणी मात्र सुख चाहता है, दुखी कोई नहीं होना चाहता। उपरोक्त परिभाषाओं में यही प्रयास है कि ऐसे करने से सुख होगा। आओ देखें सुख कैसे होगा। सरलता, सहजता, पिर्भयता, स्थिरता, ये सभी सुख की स्थिति है। ये स्थिति कैसे आएंगी। इसका उतर हमें प्रकृति या ईश्वर से सिखना चाहिए। हम देखते हैं कि ब्रहामांड के प्रत्यो किया–कलाप के पिदे एक नियम कार्य कर रहा हे। व्यवस्था के लिए आवश्यक है कि नियम का पालन किया जाए। नहीं तो व्यवस्था बिगड जाएगी ओर अव्यवस्था, स्थिरता को भंग कर देगी और दुःख होगा। नियम तोडने पर कार्य पूर्ण होने में संदेह होगा और भय लगेगा और दुःख होगा। नियम प मानने से कुछ अलग करला पडेगा और उु5ख होगा। नियम विपरित चलना व्यवस्था का विरोध होगा और कठिनाई पैदा होगी और दुःख होगा। अभिप्रायः हुआ नियमानुसार चलना सुख और नियम तोडना दुःख।

अब समस्या आई कि कौन–सा नियम मानना धर्म है। सभी सम्प्रदायों मतों के वयक्ति अपने नियमों को ठीक मानकर उनका अनुसरण करने को कहते हैं। बडी स्पष्ट बात है कि सभी के नियम व निर्देश ठीक हों तो परस्पर विरोध नहीं होना चाहिए। यदि विरोध है तो सभी नियम बात समझ लेनी आवश्यक है–कि जिन नियमों के अनुसार ब्रहामंड चल रहा है वे नियम ईश्वर या प्रकृति के बनाए हुए हैं, इनमें संशय या अधूरापन होना सम्भव नहीं है।

मनुष्य जीवन को चलाने वाले नियम प्राकृतिक नियमों के अनुकूल होने चाहिए अन्यथा उनका परिणाम अव्यवस्थित होगा जो दुःख देगा। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि ईश्वर या प्रकति पक्षपात नहीं करते और इनके नियम स्थाई होते हैं। जो नियम पक्षपात रहित है, देशकाल च्यक्ति से प्रभावित नहीं होते। तो जो नियम पक्षपात रहित है, देशकाल व्यक्ति से पूरी हैं उन्हीं नियमों का पालन सुख देगा। या यूं कहें वहीं नियम धर्म कहलायगें। और उन नियमों का पालन करने वाला धार्मिक कहलाएगा।

अब मनुष्य सामाजिक प्राणी है और नियमों के पालन करने में दूसरों का ध्यान रखना पडेगा। दूसरों का ध्यान रखते हुए नियमों का पालन करना कर्तव्य कहलाता है। इस प्रकार धर्म का दूसरा अनुवाद पालन हुआ। कर्तव्यों की परिधि भिन्न–भिन्न होने से धर्म को छोटे भागों में यह सकतें हैं।

जैसे –परिवार का धर्म, समाज धर्म, राष्ट्रधर्म इत्यादि। कर्तवय पालन, धर्म और कर्तव्य की अवलेहना अधर्म हुआ। एक ओर दृष्टि से हम धर्म–अधर्म को समझ सकते हैं। मानव मूल स्प से सुख, प्रेम, सहयोग, सुरक्षा, न्याय चाहता हैं जो कार्य उपरोक्त बातों में सहयोगी वे धर्म, जो इन स्वभावों के विपरीत वे अधर्म होंगे। उपरोक्त ऋषि–मुनि शास्त्रों–महापुरूषों द्वारा धर्म की परिभाषाओं में नियम, कर्तव्य व स्वभाव को समायोजित किया गया है ये धम्र की उपयुक्त परिभाषाएँ हैं।

यहाँ पर एक बात पर विचार कर लेना अति आवश्यक है। वह यह कि ब्रहामाण्ड के नियम सभी के लिए, सभी देशकाल में एक जैसे हैं और मूल रूप में मानव की शरीर रचना और स्वभाव एक जैसा है, तो मानव का धर्म भी एक ही होगा, दो या अधिक नहीं हो सकते। एक मानव धर्म वहीं होगा जो प्रकृति ईश्वर नियमों के अनुकूल है, देशकाल–व्यक्ति से प्रभावित नहीं है, पक्षपात रहीत है, कल्याणकारी है और जिसका प्रचलन मानव उत्पति के साथ है। बाकी सब भिन्न–भिन्न पंथ हो सकते हैं, धर्म नहीं। इस प्राकृतिक व वैज्ञानिक कसौटी पर केवल वैदिक मान्ताएँ, वैदिक दिशा–निर्देश ही पूरे उतरते हैं। इसलिए मानव–मात्र का धर्म वैदिक धर्म ही है, अन्य दूसरा नहीं हो सकता।

यहाँ यह भी प्रश्न स्वभाविक है क्या दूसरे मत पंथों की बाते बडी सही नहीं है। उतर हैं जो बाते ठीक हैं वेद से ली हुई हैं और जो बलत है वे उनकी अपनी हैं। इस बात का प्रणाम यह है कि सभी अच्छी बातें जो भिन्न–भिन्न मतों – पंथों में तिलती हैं वे वेद में नहीं है। अंत में एक पंथ में एक भी बात ऐसी नही है जो मानव कल्याण की हे ओर वेद में नहीं हैं अंत में एक प्रश्न और उठता है कि जब वैदिक धर्म ही एक मात्र धर्म है और कल्याणकारी है तों दूसरे मत पंथ क्यों प्रचलित हुए? इसका कारण वेद को सही से न समझना है। महाभारत काल से ही वेद की समझ विकृति होनी प्रारम्भ हो गई भी।

महाभारत काल के बाद वर्तमान में महार्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे महापुरूष हुए हैं जिन्होंने वेद की पुर्नस्थापना की। महार्षि के

समय तक भिन्न–भिन्न, मत पंथों के स्वार्थ इतने गहरे हो गए थे कि उस महामापव का जीवन ही ले लिया और उनके वैदिक धर्म की स्थापना के मिशन को ग्रहण लगा दिया।

देश की स्वंतत्रता के अवसर पर देश का संविधान बनाने वालों की भी धर्म के बारें में स्पष्ट और निर्दोष समझ न होने के कारण संविधान को धर्म निरपेक्ष बना दिया।

यदि संविधान निर्माताओं की समझ स्पष्ट होती कि धर्म, नियम–कर्तव्य स्वीधाव का नाम है और देशकाल व्यक्ति से पूरे है तो कोई बुद्धिशील संविधान को नियम–कर्तव्य स्वभाव से निरपेक्ष कैसे रख सकता है ? राष्ट्र ही नहीं विश्व कल्याण के लिए भी अनिवार्य शर्त है।

हमारा सुख व कल्याण इसी में है कि हम धर्म को ठीक से जानकर धर्मानुसार आचरण करें। परिवार से लेकर राष्ट्र व विश्व स्तर तक परस्परन टकराहट न हो, वैर–विरोध हो, एक दूसरे का सहयोग हो इसके लिए वैचारिक समानता अनिवार्य शर्त है। इस समानता को प्राप्त करने में स्पष्ट धार्मिक समझ अर्थात एक धर्म का होना आधारभूत बात है। अब किस धर्म को सही माने इसकी एक कसौटी हैं। इस कसौटी पर जो खरा वह ही सबको मान्य हो।

1 जो प्रकृति के नियमों के विरूद्व न हों।
2 देशकाल, व्यक्ति से सीमित पर हों।
3 मानव जीवन के प्रत्सेक क्षेत्र से संबंधित दिशा–निर्देश हों।
4 जिसकी शुरूआत धरती पर मानव जीवन के साथ हुई हो।
5 जिसकी बातें पक्षपात रहित और सभी के कल्याण की हों।

जैसे वैज्ञानिक की बातों में सभी सहमत होते हैं, कोई पक्षपात या पूर्वाग्रह नहीं होता इसी प्रकार की स्थिति, धर्म के सम्बंध में तभी हो सकती है जब धर्म की प्रत्येक बात का तर्क संगत आधार हो। यह वास्तविकता है क्योंकि मूल रूप में धर्म व विज्ञान सिक्के के दो पहलू हैं।

ऊंची सोच, पक्का इरादा और कडा संघर्ष सफलता की गारंटी है

– हवा सिंह सांगवान

किसी भी व्यक्ति को किसी भी क्षेत्र में ऊंचाईयों तक पहुंचाने के लिए ऊंची सोच, उदेश्य के लिए पक्का इरादा और उसकी प्राप्ति के लिए कभी हार न मानने वाले लगातार संघर्ष की आवश्यकता होती है। गरीबी किसी भी व्यकित को महान बनने में बांधा नहीं, बल्कि अधिकतर गरीब लोग ही महान बनते हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

चौधरी छाजूराम एक गरीब किसान के घर पैदा हुए, किराया उधार लेकर कलकता पंहुचने और वहां पर एक बंगाली इंजीनीयर के बच्चों को प्रति माह एक रूप्या लेकर काफी समय तक पढाया तथा बाद में उन्होनें बारदाना कारोबार शुरू किया और एक दिन कलकता में 'जाट बादशाह' कहलाए। सेठ घनश्याम दास बिडला चौ. छोटूराम के ही मकान के एक कमरे में सोते थे, खाना बनाते थे ओर कपडे धोते थे। उनकी मृत्यु के समय बिडला ग्रुप की 20 कंपनियां थीं, जिनके पास ढाई हजार करोड रूप्ये की संपति थी। चौ. छोटूराम के पिता जी एक कर्जदार किसान थे लेकिन चौ. छोटूराम ने करोडो और गरीबों को कर्जमुक्त करके उनकी किस्मत को बदल डाला। चौ. चेती लाल वर्मा का जन्म 2 जून सन् 1921 को पलवल के गांव में एक साधारण किसान के घर हुआ। उस समय आसपास कोई नहीं था अतः उनकी पढाई दंसवी तक हुई। सेठ छोटूराम की तरह वह भी एक बंगाली मित्र के साथ कलकता गये। वहां पर व्यावार के गुर सिखे, कस्ट्रक्शन की एक कंपनी बनाई और विदेंशो में कस्ट्रक्शन का काम करने वाले पहले भारतीय होने का गौरव प्राप्त किया। धीरूभाई अंबेानी कभी एक पेट्रोल पंप पर लोगों की गाडियों में तेल डाला करते थे, आज उनके द्वारा स्थापित की गई रिलांयस कंपनी भारत की सबसे बडी कंपनी है। और उसका कारोबार आधी दुनियां में फैल चुका है। करसन भाई पटेल कभी एक सरकारी प्रयोशाला में छोटी सरकारी नौकरी किया करने थे लेकिन उन्होनें अपने प्रयोगों से निरमा डिटरजेंट पाऊडर की खोज की और उन्होनें पूरे देश की कपडा धोन की आदतों को साबुन से डिटरजेंट में बदल डाला। लक्ष्मी मितल पश्चिमी राजस्थान के ऐसे गांव में पैदा हुए, जहां न बिजली, न पानी और न ही कोई सडक थी, लेकिन उन्होनें दुनिया की सर्वश्रेष्ठ कंपनी को स्थापित किया और इंग्लैंड में सन् 2004 में सात करोड पाऊंउ का दुनिया का सबसे मंहगा घर खरीदा। नारायणमूर्ति के पिताजी एक छोटे से स्कूल के अध्यापक थे, लेकिन नारायणमूर्ति ने अपनी नौकरी छोडने के बाद व्यवसाय शुरू किया और विश्व स्तरीय इनफोसिस कंपनी की स्थापना कर डाली।

जापान के सोइशिरों होंडा का सब कुछ द्वितीय विश्व युद्व में अमेरीकी बमबारी में तबाह हो गया था, केवल उसकी पत्नी के गहने शेष बच गए और इन्हीं गहनों की बदौलत उन्होनें पुनः कारोबार शुरू किया और एक दिन दुनिया की बेहतरीन ऑटोमोबाइल कंपनी होंडा की स्थापना की। वर्तमान में हीरो साईकिल निर्माता मुंजाल ब्रदर्स के दादा जी लुधियाना में एक साईकिल मरम्मत की दुकान चलाते थे, लेकिन वर्तमान में यही हीरो साईकिल के निर्माता तथा सोईशिरो होंडा से मिलकर हीरों होंडा मोटरसाईकिल कंपनी की स्थापना की और वर्तमान में इन्हीं की मोटरसाईकिलों पर हर जगह भारतीय लोग सफर करते हंए नजर आते हैं। एक गरीब किसान के घर पैदा होने वाले हैनरी फौर्ड ने अमेरिका में कारो की लोकप्रिय कंपनी फोर्ड की स्थापना की। फरेक बूलवर्थ जिसे बचपन में गरीबी के कारण छह महीनें नंगा रहना पडता था और सर्दियों के कपडे पहनने के लिए नहीं होते थे, लेकिन वे एक दिन दुनिया के महानरिटेल व्यवसायी बने और सन् 1913 में उस समय की सबसे ऊंची इमारत बूलवर्थ बिल्डिग का निर्माण करवाया।

जॉन.डी.रॉकफेलर , जो अपनी 16 वर्ष की अवस्था में गरीबी के कारण बुककीपर का काम करते थे, उन्होनें विख्यात स्टैंडर्ड ऑयल कंपनी की स्थापना की और अमेरिका के प्रख्यात उघोगपति बने। एंड्रयू कार्नेगी एक सूती मिल में मजदूरी किया करते

थे, लेकिन एक दिन वे अमेरिका के प्रख्यात उघोगपति और स्टील किंग कहलाए। मैडम सी.जे. वाकर एक गरीब किसान माता–पिता के साथ दिहाडी पर मजदूर करके पली थी, जो बचपन में ही अनाथ हो गई, लेकिन उन्होनें एक दिन औरतों के लिए शैंपू और क्रीम का फार्मूला तैयार किया और अमेरिका की विख्यात उघोपति बनी। एस्टी लाडर कभी न्यूयार्क की झुग्गी झोपडी बस्ती में रहकर बडी हुई, जिसे बचपन में कभी पेट भरकर खाना नसीब नहीं हुआ, लेकिन बाद में उन्होनें अमेरिका की सबसे बडी कास्मेटिक फर्म की स्थापना की और उन्होनें दुनिया में सबसे पहले सामान के साथ मुफत उपहार देने की परंपरा शुरू की। सैम वाल्टन कभी अमेरिका में सात साल की उम्र में सवेरे मुंह अंधेरे ही गायों का दूध निकालकर लोगों के घरों में अखबार बांटा करते थे, लेकिन उन्होनें बाद में फोर्ब्स मैगजीन की स्थापना की और उन्हें सन् 1885 में अमेरिका का सबसे अमीर घोषित किया गया।

बेरी गोर्डी का जन्म अमेरिका की एक डेट्राइट नाम की झुग्गी में हुआ। उनको संगीत का बहुत बडा नशा था और उसी जुनून के कारण उन्होनें एक दिन मोटाटाऊन रिकार्ड्स जैसी विश्वविख्यात कंपनी की स्थापना कर डाली। टॉमन मोनाहन ने अपने माता–पिता को बचपन में ही खो दिया था और उनका पालन–पोषण एक अनाथालय में हुआ। लेकिन उन्होनें एक दिन अमेरिका में सबसे बडी पिज्जा कंपनी डोमिनोज की स्थापना कर डाली, जो आज करोडों डॉलर के मालिक हैं। टेन टर्नर जो अक्सर बचपन में अपने माता–पिता से अपने निकम्मेपन की वजह से पिटते रहते थे और फिर सेल्समैन का काम करते हुए बाद में केबल के गॉडफादर तथा सीएनएन के संस्थापक बने जो वर्तमान में तीन बिलियन डॉलर से अधिक संपति के स्वामी हैं। रिचर्ड बोन्सन कुछ भी न करने वाला एक जिद्दी लडका था। एक दिन उसकी माता उसे आठ साल की उम्र में लंदन ले गई और उसे एक सुनसान मैदान में अकेला छोड दिया और यह चुनौति देकर आ गई कि वह अपना रास्ता स्वयं खोजे। इसी पर उस बच्चे ने ऐसा सबक सीखा कि एक दिन उसने विख्यात वर्जिन एयरवेज की स्थापना कर डाली। डेबी फलल्ड्स, जो बचपन में एक परिवार के बच्चे को संभालने की नौकरी किया करती थी, एक दिन दुनिया के चाकलेट चिप–कुकीज की स्थापना कर डाली, जिसके वर्तमान में 1553 स्टोर हैं।

दुनिया में कंप्यूटर क्रांति के जनक बिल गेट्स कभी अपनी पढाई पूरी नहीं कर पाए थे। इसी प्रकार इटली के गेलिलियो गैलिली भी अपनी पढाई पूरी नहीं कर पाए थे, लेकिन वे महान खगोल शास्त्री बने, जिन्होनें अरस्तु के सिद्धांत को भी गलत साबित कर दिया। महान वैज्ञानिक सर आईजैक न्यूटन के पिता उनके जन्म से पहले ही गुजर गए और वे जब तीन साल के थे, उनकी माता दूसरी शादी करके उनको छोड गई। वे केवल दो साल तक स्कूल में पढ पाए, लेकिन उन्होनें एक के बाद एक वैज्ञानिक खोज कर डाली। चेचक के टीके की खोज करने वाले एडवर्ड जैन्नर अपनी गरीबी को ओरिजन में आज स्पीशीज का सिद्वान्त दिया जिससे दुनिया खोज करने के बाद भी किसी भी गरीब से उन्होनें टीके के पैसे नहीं लिए। गैसों को द्रव्य अवस्था में लाने की विधि खोजने वाले माइकल फैराडे एक गरीब लोहार के बेटे थे, जिन्हें 13 साल की उम्र में स्कूल छोडना पडा। चार्ल्स डार्विन बचपन में पढाई में बहुत कमजोर थे, लेकिन उन्होनें अपने जनूनी स्वभाव के कारण दुनिया के धर्मो के सिद्वातों में उथल–पुथल मच गई और यहां तक कि इसी कारण उनकी पत्नी ने उन्हें तलाक दे दिया था।

एन्थ्रैक्स, हाइड्रोफोबिया और रैबीज जैसी गंभीर बीमारियों के इलाज ढूंढने वाले लूई पास्चर एक जूती गाठने वाले पिता के पुत्र थे। उनके आधे शरीर को लकवा मार जाने पर भी वे हमेशा अपनी खोजों में जुटे रहे और दुनिया को इन बीमारियों से निजात दिलवाइ। बिजली के बल्ब और रिकार्ड प्लेयर जैसे अनेकों उपयोगी अविष्कार करने वाले थायम एडीसन के शिक्षक ने साफ कह दिया था कि वे जीवन में न तो कुछ सीख सकते हैं और न ही कुछ बन सकते हैं और वे केवल तीन महीने स्कूल गए। उन्होनें जो कुछ भी पढा, अपने घर और लाईब्रेरी में ही पढा। टेलीफोन का अविष्कार करने वाले अलैक्जेंटर ग्राहम बेल को बचपन में एक आवारा लडका समझ गया दुनिया में दो नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाली इकलौती महिला मेरी क्यूरी बचपन में अपनी मां की मृत्यु के बाद तथा पिता का सब कुछ चौपट होने पर ये सफलताएं उन्होनें प्राप्त की। सबसे पहले हवाई जहाज उडाने वाले राईट बन्धु हाई स्कूल पास भी नहीं थे। वे केवल साईकिलों की दुकान में काम किया करते थे, परतुं एक दिन उन्होनें दुनिया को हवा में उडन सिखा दिया। सबसे पहले रेडियो सिग्नल का अविष्कार करने वाले तथा नोबल पुरस्कार विजेता मार्कोनी ने अपने ये अविष्कार केवल 27 साल की उम्र में ही कर लिए थे। प्राख्यात वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टीन, जिन्होनें दुनिया को सापेक्षता का सिद्वांत दिया और नोबल पुरस्कार प्राप्त किया, को स्कूल में एक आयोग्य छात्र मानकर प्रवेश से मना कर दिया गया था। भारत वर्ष के राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के पिताजी एक मछुआरे थे और कलाम साहब बचपन में गरीबी के कारण अखबार बेचा करते थे। एक दिन वे मिसाइलमैन कहलाए तथा उन्हें भारत रत्न से नवाजा गया।

अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन पहले सैनिक थे और फिर सेनापति बने। उन्होनें ही पूरे अमेरिका को एक सूत्र बांध कर संयुक्त राज्य अमेरिका बना दिया। अमेरिका के सौलहवें राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन, जिसने अमेरिका को दास प्रथा से मुक्ति दिलाई, बचपन में लकडहारे थे। उन्होनें इलैक्टर से लेकर उपराष्ट्रपति तक के चुनाव लडे, लेकिन कभी भी सफल नहीं हो पाए, लेकिन बाद में 51 साल की उम्र वे राष्ट्रपति बन गए। दूसरे विश्वयुद्व के दौरान ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल, जिन्हें नोबल पुरस्कार भी मिला, बचपन में बहुत ज्यादा हकलाने वाले व्यक्ति थे, लेकिन उन्होनें बोलने का लगातार गहन प्रयास किया और एक दिन महान वक्ता कहलाए।

एफ. डी. रूजवेल्ट अमेरिका के एकमात्र राष्ट्रपति थे, जो चार बार राष्ट्रपति चुने गए। वे बचपन से कमर के निचे पूरी तरह अपाहिज थे, लेकिन उन्होनें कभी हार नहीं मानी, इसलिए बाद में अमेरिका में केवल दो बार ही राष्ट्रपति बनने का कानून बना। भारत

धैर्य रखना मुश्किल होता है, लेकिन उसका फल मीठा होता है। – ससो

वर्ष के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का परिवार इतना गरीब था कि उनको गंगा के उस पार नाव द्वारा स्कूल में जाने का पैसा भी नहीं होता था और उन्हें तैरकर आना–जाना पडता था। दक्षिणी अफ्रीका को 27 साल जेल में रहकर आजादी दिलाने वाले नेल्सल मडेंला एक गरीब परिवार से थे, जो बाद में वहां के राष्ट्रपति बने। तीन बार विश्व हैवीवेट बॉक्सिंग का खिताब जीतने वाले मोहम्मद अली के पिता एक छोटे से पेंटर थे और उनकी मां घरेलू नौकरानी थी। बचपन में गरीबी के कारण दान दिए हुए कपडे पहनते थे,लेकिन उन्होनें 12 वर्ष की उम्र में ही ये संकल्प ले लिया था कि वे दुनिया के महानतम बॉक्सर बनेंगे।

ये सभी उदाहरण साबित करते हैं कि सफलता के मार्ग में न तो गरीबी और न ही शारीरिक विकलांगता बाधा उत्पन्न कर सकती है, बल्कि ऊंची सोच, पक्का इरादा तथा कडा संघर्ष इंसान को सफलता के शिखर पर पहुंचा देता है। इसलिए हमें यह शिक्षा मिलती है कि इस सिद्वांत को हम दृढता से पालन करें और जीवन मं कुछ नया करके दिखाएं।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 29.01.91) 27/5'6" M.Sc. Govt. Employee Panchkula. Avoid Gotra: Dahiya, Lakara, Chhillar. Mob.: 9466414857
- SM4 Jat Girl (DOB 27.10.88) 29/5'3" MA (Hindi) NET, JRF, Ph.D from Punjab University. Avoid Gotras: Godara, Jandu, Suhag. Cont.: 09855868915
- SM4 Jat Girl (DOB 25.04.93)24.10/5"3" MSc. Nurshing. Avoid Gotras: Pilania, Malik, Singroya. Cont.: 09896813684
- SM4 Jat Girl (DOB 15.08.89)28.4/5'3" B. Tech., MA (English) Working as P.G.T. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhanda. Cont.: 09417196763
- SM4 Jat Girl 27/5'5" MA (English) Hons. B.Ed. CTET cleared, APS Clear, Doing Ph.D Avoid Gotras: Jatana, Chahal.Cont.: 09417565431
- SM4 Jat Girl (DOB 11.04.88) 29.8/5'4" B.Tech Mechanical, Working in MNC Mumbai. Father employed in Air Force Chandigarh. Avoid Gotras: Dhattarwal, Chahal, Bhyan, Juglan. Cont.: 09642566472
- SM4 Jat Girl (DOB 07.05.90) 27.7/5'5" M.Sc. Bio Informatics, Working in MED Company. Brother, Bhabi in U.K. Father Ex-IAF, now in Haryana Govt. in good position. Avoid Gotras: Kataria, Khatkhar.Cont.: 09988643695, 09888689316
- SM4 Jat Girl (DOB March 1989) 28.10/5'3" MCA from Punjab Chandigarh. Working in Punjab & Haryana High Court. Avoid Gotras: Sheoran, Punia, Sangwan. Cont.: 09988359360
- SM4 Jat Girl (DOB 31.05. 90)27.7/5'6" B.Tech. (Textile Technology), PIET, Samalkha (gold medalist in 2011.) GATE qualified, M. Tech (Fashion Technlogy) BVSMV, Khanpur Kalan (gold medalist) 2014. Employed as Assistant Professor PIET, Samalkha since August 2014. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Chahal, Pahal. Cont.: 09717484982
- SM4 Jat Girl (DOB 19. 07. 90) 27.5/5'4" M.A., M.Phil, Ph.D, NET, HTET, PGT Test cleared. Avoid Gotras: Duhan, Sehrawat, Kundu. Cont.: 09416620245
- SM4 Jat Girl 26/5'3" MBA Working in MNC Gurgaon with 11 LPA. Father Class one officer/E.D. Chandigarh. Preferred Civil Service/ IIT, IIM, MNC/PCS boy. Avoid Gotras: Dhaka, Lodyan, Phalswal. Cont.: 09530994232
- SM4 Jat Girl (DOB 24.07.89) 28.5/5'5" B.Com (Hons.) CS, PGDBA, MBA, Working as Company Secretary in a reputed company at Chandigarh. Avoid Gotras: Gahlawat, Jakhar, Ola. Cont.: 09464741686
- SM4 Jat Girl 27/5'2" B.A. JBT, Pursuing MA. Avoid Gotras: Lakra, Dahiya, Gulia. Cont.: 08930821521, 0130-2285030
- SM4 Jat Girl (DOB 28.11.93) 24/5'2" Graduation from P.U. and doing MA from P. U. Avoid Gotras: Beniwal, Sejwal, Kadian, Kuhad, Kaliraman. Cont.: 08699378476
- SM4 Jat Girl (DOB 02.03.93)24.7/5'2" Passed Staff Nurse (GNM) Course. Employed in a reputed hospital at Zirakpur. Avoid Gotras: Doriwal, Lakhlan, Beniwal. Cont.: 09023265894
- SM4 employed Jat Girl (DOB August 1991) 26/5'2" B.Com, MBA, B.Ed. Knows car driving. Father retired, mother teacher Avoid Gotras: Malik, Lohan. Cont.: 09416367647, 09416203233
- SM4 Jat Girl (DOB 04.05.90)27.5/5'3" MCA, B.Ed. Maths Avoid Gotras: Sangwan, Phogat, Dangi. Cont.: 09813776961
- SM4 Jat Girl 24/5'8" M.A. English Knowledge of Short Hand Typing. Avoid Gotras: Malik, Sangwan, Dahiya. Cont.: 09217884178
- SM4 Jat Girl (DOB10.05.84)23.5/5'2" B.P.T. Employed as Psiothrepist in Semi-Govt. Hospital at Panchkula. Avoid Gotras: Bains, Durka. Cont.: 09815078800, 09882249898
- SM4 Jat Girl (DOB 23.12.91)25.10/5'4" B.Com. Hons, MBA Employed as P.O. in ICICI Bank Pune. Avoid Gotras: Bijarnia, Jakhar. Cont.: 09023093808
- SM4 Jat Girl (DOB 13.09.92)25/5'3" B.Sc (Computer Sccience), M.Sc math with Computer Science from MDU.Rohtak, B.Ed. from Punjabi University. Father is Block Officer in Forest Deptt. at Pinjore. Avoid Gotras: Jatain, Dahiya, Dhattarwal. Cont.: 08901273699
- SM4 Jat Girl 27/5'3" B.Com, MBA (Finance) Employed in MNC, Mohali. Avoid Gotras: Saroha, Phaugat, Sehrawat. Cont.: 09888462399
- SM4 Jat Girl 27/5'7" BDS, Pursuing for MDS Father Retired Army Officer. Avoid Gotras: Narwal, Mor, Kadyan. Cont.: 08556074464
- SM4 Jat Girl DOB (18.10.84) 33/5'3" B.Com, M.Com from Kurukshetra University, Computer Course in Financial Accounting & Honours Diploma in Computer Application. Doing job as Accountant of Share Market (BSE) at Panchkula. Avoid Gotras: Kadian, Malik, Khatri. Cont.: 09468089442, 08427098277
- SM4 Jat Girl DOB 1990 27/5'7" Post Graduate, Employed at Chandigarh. Only well settled family with urban background, preferably in Tricity. Avoid Gotras: Khatkar, Malik. Cont.: 09888626559
- SM4 Jat Girl (DOB 18.08.88) 29/5'3.6" M.Sc. Math, B.Ed. Working in a reputed private School. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 09354839881
- SM4 Jat Girl (DOB 13.06.90) 27/5'2" B.Tech (CSE) Employed as Assistant in Central Excise Department at Chennai. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Joon. Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Girl (DOB 08.11.90) 26.10/5'3" Employed as Staff Nurse in Government Hospital, Sector 6, Panchkula. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont.: 09463881657
- SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 25.10/5'5" B.A. LLB, (Hons) LLM, Persuing Ph.D from M.D.U. Rohtak. Advocate in Punjab &

जिसके पास विद्या रूपी नेत्र नहीं है, वह अंधे के समान है। – अज्ञात

Haryana High Court. No dowery seeker. Preferred match Chandigarh, Panchkula Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 09417333298

- SM4 Jat Girl (DOB March1990) 27.5/5'7" Convent educated, Post Graduate, Employed, Highly educated family. Please contact only well educated family. Tcicity (around Chandigarh) based family preferred. Avoid Gotras: Sura, Malik. Cont.: 09888626559
- SM4 Jat Girl (DOB 21.04.88) 28.3/5'1" M.Tech from P.U. Chandigarh, GATE cleared. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhal. Cont.: 09467671451
- SM4 Jat Girl (DOB 23.10.87) 29.8/5'5" B.Com, MBA, MIS, M.A (Economics.) Avoid Gotras: Panghal, Baloda, Bhaghasra. Cont.: 09463967847, 09463969302
- SM4 Jat Girl(DOB 07.02.90) 26.10/5'10" B.Tech (ESE) M.Tech (ESE) from MDU Rohtak. GATE qualified. Avoid Gotras: Kadian, Rathee, Sangwan. Cont.: 08447796371
- SM4 Jat Girl 26/5'5" B.D.S. Employed in Parexel Company in I.T. Park Chandigarh. Family settled at Chandigarh. Tri-city match preferred. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Sandhu. Cont.: 09779721521
- SM4 Jat Boy 26/6' MBA. Doing Private business. Preferred MBA, MA, B.Ed match with atleast 60% marks. Avoid Gotras: Malik, Vigyan, Rajan. Cont.: 0172-4185373
- SM4 Jat Boy (DOB 27.02.90) 27/10/5'6" Settled in Australia, NRI status, PR holder. Doing own business. Preferred match who has no problem in settling abroad. Avoid Gotras: Chhikara, Dahiya, Bazar. Cont.: 09467680428
- SM4 Jat Boy (DOB 16.08.88) 29/4/6' Double MA, (Public Administration & Socioloty) Employed as JBT teacher. Family settled at Panchkula. Own house. Father is gazetted officer in Haryana Government. Avoid Gotras: Dhillon, Siwach, Suhag. Cont.: 09463654505
- SM4 Jat Boy (DOB 20.09.88) 29/5'11" I.I.T (Delhi) MBA from XLRI Jamshedpur. Working in Private sector. Father professor in M.D.U. Rohtak. Preferred well qualified, hardworking, ambitious match. Avoid Gotras: Malik, Dahiya. Cont.: 08084028112
- SM4 Jat Boy 27/5'10" Employed as Auditor-CAG at Itanagar. Avoid Gotras: Sehrawat, Ahlawat, Phogat. Cont.: 09215641283
- SM4 Jat Boy (Divorced-no issue) 38/5'9" MSc. Statistics from H.A.U. Hisar Employed in Franklin Tempton Investment Company Hyderabad with Rs. 38 LPA. Avoid Gotras: Sheoran, Bachhal. Cont.: 09416271636
- SM4 Jat Boy 25/6' B.Com, Doing M. com Employed in Central Post Office at Chandigarh. Family settled at Chandigarh. Preferred match in Govt. job. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Sandhu. Cont.: 09779721521
- SM4 Jat Boy 29/5'11" MBA Employed in South Africe with 18 Lak package. Avoid Gotras: Lakra, Dahiya, Gulia. Cont.: 08930821521,
- SM4 Jat Boy 27/5'10" Matric passed, Deaf & Dumb Doing private job. Avoid Gotras: Beniwal, Kadian, Dhankhar. Cont.: 09255479697
- SM4 Jat Boy 26/6'2" B.Tech (Computer Science) Employed in I.T. Company (Presto) at Mohali with Rs. 6 lakh Package. Avoid Gotras: Bhanwala, Antil, Grewal. Cont.: 09466188502
- SM4 Jat Boy 28/5'10" Employed as Service Engineer in TATA Motors at Narela (Delhi) Avoid Gotras: Kundu, Malik, Rathee. Cont.: 08950092430
- SM4 Jat Boy (DOB 14.11.92) 25/6' B.E. (Mechanical) Employed in BALCO (Bharat Alumy) KORBA as Assistant Manager. Father working as Junior Executive BALCO, Mother housewife. Only son. Avoid Gotras: Jhajariya, Pawadia, Jhanuwa. Cont.: 09416206610
- SM4 Jat Boy (DOB13.10.86) 31/6' B.Tech (ECE) Employed in Punjab Judicial Department. Avoid Gotras: Siwach, Dahiya, Suhag. Cont.: 09988005272
- SM4 Jat Boy (DOB 05.06.88) 29.2/5'11" Employed as Computer Programmer in Food & Supply Deptt. Kaithal. Familay settled in Kaithal. Six acre Agriculture land. Avoid Gotras: Ravish, Sheoran, Badu, Kala. Cont.: 09729867676
- SM4 Jat Boy 28/5'8" LLB, Practising Advocate, Own house, plot, flat, 3 acre agriculture land. Father Senior Advocate. Avoid Gotras: Balyan, Nehra. Cont.: 09996844340, 09416914340
- SM4 Jat Boy (DOB 16.08.88) 29/5'10" MA (Public Admn.) Employed as Govt. JBT Teacher at Panchkula. Avoid Gotras: Dhillon, Siwach, Swag. Cont.: 09417424260
- SM4 Jat Boy (DOB1882)35/5'9" M. A. (Eng.) M.A Mass Communications, M.Phil mass communications and Ph.D mass communications from K.U.K. Working as Deputy Chief Reporter in Dainik Jagran with Rs.35000/- P.M. Father ex-serviceman, mother retired teacher. Avoid Gotras: Malik, Gahlawat. Cont.: 09416616144
- Suiotable match for Jat Boy 29/5'11" Employed as team leader in IT Park Chandigarh with Rs. 8 lakh package PA. Avoid Gotras: Khatri, Ohlyan, Rathee. Cont.: 09833286255, 09468463165
- SM4 Jat Boy (DOB13.08.89) 27/5'10" B. Tech. from India, M.Tech from Canada. Doing Job in TRONTO (Canada). PR status. Avoid Gotras: Sarao, Basiana, Ojaula. Cont.: 08288853030
- SM4 Jat Boy (DOB13.08.89) 31.7/6'1" MA, Mass Communications from London. Working in MNC Gurgaon with 12,5 lakh package PA. Avoid Gotras: Dahiya, Ahlawat. Cont.: 09717616149
- SM4 Jat Boy 30/5'9" B.Tech, MBA (UK) Marketing Manager, 60 lacks PA Avoid Gotras: Tomar, Poriya. Cont.: 09412834119
- SM4 Jat Boy 30/5'10" MBA Working in MNC, CTC 14Lpa, Preferred B.Tech, MBA/Lecturer Avoid Gotras: Panwar, Kadian, Dalal. Cont.: 09810280462
- SM4 Jat Boy (DOB 30.09.89) 27.6/5'10" B. Tech. Computer Engineering. Two flats and one showroom in Gurgaon Fathr retired Principal. Avoid Gotras: Sheokand, Malik, Punia. Cont.: 09871044862
- SM4 Jat Boy (DOB 28.10.85) 31.4/5'11" MBBS, M.S. from PGI Rohtak. Posted at Bhalot (Rohtak) as regular Medical Officer. Preference M.D.,MBBS match. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09416770274
- SM4 Jat Boy (DOB 28.10.90)26.10/5'11" BDS, MDS.. Father S.D.O. retired from Haryana Government. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09416770274
- SM4 Jat Boy (DOB 01.08.85)31.6/6'1" M.A.,Mass Communication from London (England). Employed in MNC Company at Gurgaon with Rs.12.50 Lakh Package PA. Avoid Gotras: Dahiya, Ahlawat. Cont.: 09717616149
- SM4 Jat Boy (DOB Nov.1989) 27.1/6' B.Sc in Hospitality & Hotel Administration. Occupation Hotel Industries in Dubai Package Rs.10 lakh P.A. Father, Mother Haryana Govt. Employees at Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Dahiya, Tomar (Not direct Sangwan, Bhanwala). Cont.: 09416272188

बंसत पंचमी एवं सर छोटूराम जयंती की झलकियां

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।